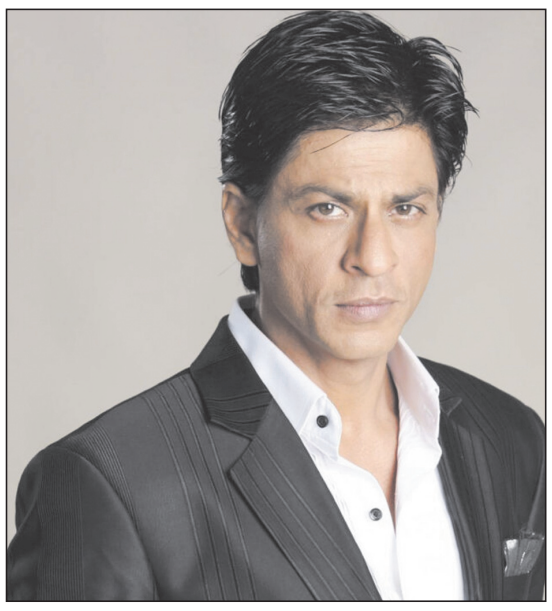

सबसे पहले एआर मुरुगादॉस ने की थी दिल मद्रासी की प्लानिंग

दक्षिण भारतीय फिल्मकार एआर मुरुगादॉस ने बताया कि शाहरुख खान के साथ हिंदी में सबसे पहले फिल्म दिल मद्रासी की प्लानिंग की थी.

शिवकार्तिकेयन और एआर मुरुगादॉस पहली बार साथ मिलकर एक सबसे ज्यादा इंतेज़ार की जाने वाली एक्शन थ्रिलर फिल्म दिल मद्रासी में काम कर रहे हैं. श्री लक्ष्मी मूवीज द्वारा बनाई जा रही यह फिल्म एक जोश से भरी शानदार एक्सपीरियंस देने का वादा करती है. इतना तय है कि यह बॉक्स ऑफिस पर धमाका मचाने वाली है. ऐसे में हम जहां शिवकार्तिकेयन और ए.आर. मुरुगादॉस की जोड़ी को देखने के लिए उत्साहित हैं, वहीं पहले इस फिल्म का हिंदी वर्सन शाहरुख खान के साथ बनाए जाने की प्लानिंग की गई थी.

ए.आर. मुरुगादॉस ने बताया, मैंने पूरी फिल्म (मद्रासी) शाहरुख खान के साथ प्लान नहीं की थी, लेकिन मैंने यह किरदार उन्हें काफी समय पहले पिच की थी. मैंने उन्हें सात-आठ साल पहले बताया था, और उन्हें भी यह पसंद आई थी.उन्होंने कहा, उस समय मेरे पास सिर्फ किरदार थाज सिर्फ एक आइडिया, पूरी स्क्रिप्ट नहीं. फिल्म (मद्रासी) देखने के बाद आप समझेंगे कि मैं 'किरदार' से क्या मतलब था. उस समय सिनेमैटोग्राफर रवि के चंद्रन ने मेरे लिए शाहरूख से मिलने का इंतज़ाम किया. वह बहुत अच्छे थे और उन्होंने कहा था, 'हम फिल्म करेंगे', लेकिन डिले बहुत लंबी हो गया, इसलिए यह कभी हो नहीं पाई.

कृति बनीं यूएनएफपीए की मानद राजदूत

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएन एफपीए) इंडिया ने बॉलीवुड अभिनेत्री, निर्माता और उद्यमी कृति सनोन को लैंगिक समानता के लिए अपना मानद राजदूत नियुक्त किया है.

कृति सनोन अपनी नई भूमिका में, महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों और कल्याण की वकालत करेंगी और सशक्तिकरण, शिक्षा, लैंगिक हिंसा को समाप्त करने और सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना समर्थन प्रदान करेंगी.

कृति सनोन ने अपनी नई भूमिका के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा, लैंगिक समानता के लिए यूएनएफपीए इंडिया की मानद राजदूत के रूप में शामिल होकर मुझे बेहद सम्मानित महसूस हो रहा है. यह भूमिका महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों और विकल्पों की वकालत करने के लिए एक अद्भुत मंच प्रदान करती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि उन्हें अपने निर्णय लेने, अपने सपनों को साकार करने और हिंसा एवं भेदभाव से मुक्त जीवन जीने की स्वतंत्रता मिले. मैं हर महिला और लड़की को सशक्त बनाने, उनकी आवाज़ को बुलंद करने, उनकी कहानियाँ सुनाने और एक अधिक समान एवं न्यायपूर्ण समाज के लिए सामूहिक कार्रवाई को प्रेरित करने के लिए बेहद उत्साहित हूँ. मैं उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए यूएनएफपीए इंडिया के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूँ.

यूएनएफपीए भारत की प्रतिनिधि एंड्रिया एम. वोजनार ने कहा, हमें कृति सनोन का लैंगिक समानता के लिए मानद राजदूत के रूप में स्वागत करते हुए बेहद खुशी हो रही है. उनकी सशक्त आवाज़, जुनून और व्यापक प्रभाव हमारे संदेश को व्यापक बनाने और व्यापक दर्शकों, खासकर युवाओं तक पहुँचने में सहायक होगा. महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों, अवसरों और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए कृति का समर्पण यूएनएफपीए के एक समान और न्यायपूर्ण समाज के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह मेल खाता है. हमें विश्वास है कि उनके प्रयास सार्थक बदलाव को प्रेरित करेंगे और यह सुनिश्चित करने की दिशा में प्रगति को गति देंगे कि हर महिला और लड़की सम्मान के साथ रह सके और अपनी क्षमता का पूरा उपयोग कर सके.

उफ्फ ये सियापा का नया गाना 'तमंचा'

फिल्म उफ्फ ये सियापा का नया गाना तमंचा रिलीज हो गया है. फिल्म उफ्फ ये सियापा बॉलीवुड की आम कॉमेडी फिल्मों से हटकर है. यह फिल्म सच्चे मायने में एक हिम्मती प्रयोग है, जिसमें बिना किसी डायलॉग्स के पूरी कहानी दिखाई जाने के लिए तैयार है. इस फिल्म का नया गाना तमंचा रिलीज हो गया है.

इस गाने को लीजेंडरी ए.आर. रहमान ने कंपोज किया है, वहीं, सुनिधि चौहान ने अपनी दमदार और जोशीली आवाज से इसे सजाया है. जबकि, गाने के बोल अमिताभ भट्टाचार्य के हैं. तमंचा एक जोश से भरा डांस नंबर है, जो शानदार धुनों को एक मूडी अंदाज़ के साथ मिलाने के साथ पेश करता है. गाने में नोराफतेही अपने कमाल के मूव्स के साथ दिलकश अदाएं दिखाती नजर आएंगी. गाने में उनके साथ सोहम शाह भी हैं.

ए.आर. रहमान ने कहा, फिल्म जिसमें डायलॉग का इस्तेमाल नहीं किया गया है, वहां म्यूजिक सिर्फ बैकग्राउंड नहीं है, बल्कि यह आगे बढ़कर बात करती है. तमनचा में हमने थोड़ा सब्र और सटीकता अपनाया है, जिसमें खुद को रोकने के साथ जोश भी बनाए रखना था. इस तरह से गाने में मौजूद भावनाओं को रिदम आगे बढ़ाता है.

सुनिधि चौहान ने बताया, यह गाना लुभाए जाने और बोल्डनेस के बीच एक संतुलन बनाता है. यह ज्यादा लाउड नहीं है, लेकिन लंबे समय तक साथ बने रहता है, और इसी चीज ने इसे गाने के लिए क्रिएटिव तौर से बेहद मज़ेदार बनाया है.

उफ्फ ये सियापा% लव फिल्म्स की पेशकश है. इसे जी. अशोक ने लिखा और निर्देशित किया है. फिल्म के प्रोड्यूसर लव रंजन और अंकुर गर्ग हैं. यह फिल्म 05 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

अभिनय तभी असरदार होता है जब वह एक्टिंग न लगे : सुप्रिया

जानीमानी चरित्र अभिनेत्री सुप्रिया शुक्ला का कहना है अभिनय तभी असरदार होता है जब वह एक्टिंग न लगे.

सोनी सब का शो उफ्फज्ये लव है मुश्किल दर्शकों के दिलों में जगह बना रहा है, जहां परिवार के भावुक रिश्तों और दिल छू लेने वाले पलों का अनोखा संतुलन दिखाया गया है. इन किरदारों में से एक हैं मायरी, जिसे जानी-मानी अभिनेत्री सुप्रिया शुक्ला निभा रही हैं. अपने पहले निभाए गए मां के किरदारों से अलग, सुप्रिया इस बार एक ऐसे रोल में हैं जिसमें बचपना, सहजता और गहराई एक साथ नजर आती है.

सुप्रिया शुक्ला ने कहा, मायरी उन सभी मां के किरदारों से बिल्कुल अलग है जो मैंने अब तक निभाए हैं. उसकी जिंदगी लगभग 12-14 साल पहले थम-सी गई थी. कभी वह जज रही है, लेकिन अब उसमें एक बेफिक्र और लगभग बचपने वाली मासूमियत है. मेरे लिए यह बिल्कुल नया अनुभव था. मैंने उसे असलियत के करीब रखने की कोशिश की है, न कि एक रूढ़िबद्ध छवि बनाने की. सेट पर माहौल बहुत शानदार रहता है. सभी कलाकार बेहद टैलेंटेड हैं. शब्बीर बेहतरीन को-एक्टर और दिल से अच्छे इंसान हैं. हमने पहले भी साथ काम किया है, तो हमारी ट्यूनिंग काफी अच्छी है. आशी भी शानदार है. यंग एक्टर्स बहुत ऊर्जा और उत्साह लेकर आते हैं. सच कहूं तो मुझे रोज़ सेट पर आने की खुशी होती है. और हां, खाना सबकी पसंदीदा चीज़ है.हमारी लंच ब्रेक्स हमेशा खास होती हैं!

सुप्रिया शुक्ला ने कहा, शो में हल्के-फुल्के पारिवारिक पल और गहन इमोशनल ड्रामा,दोनों का मेल है. उन्होंने कहा,मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती है ईमानदारी से अभिनय करना. अभिनय तभी असरदार होता है जब वह एक्टिंग न लगे. चाहे कॉमेडी हो या गहन ड्रामा, यदि सीन मेरे दिल को छू लेता है तो मुझे यकीन होता है कि दर्शकों के दिल को भी छुएगा.

सुनंदा ने बाढ़ पीड़ितों को राहत किट वितरित किया

लोकप्रिय गायिका सुनंदा शर्मा ने पंजाब में बाढ़ पीड़ित 250 परिवारों को राहत किट वितरित किया है.

सुनंदा शर्मा ने यह दिखाया है कि उनका दिल संगीत की तरह ही मानवता के लिए भी धड़कता है. सुनंदा ने हाल ही में पंजाब में 250 परिवारों को व्यक्तिगत रूप से राहत किट वितरित की.यह पहल ज़रूरतमंदों को राहत पहुंचाने का एक हार्दिक प्रयास था. प्रत्येक राहत किट में सोलर लाइट, मासिक धर्म स्वच्छता किट और तिरपाल थे.

किट प्राप्त करने वाले लोगों के लिए, यह भाव केवल आपूर्ति से कहीं अधिक था. कई लोगों ने बताया कि कैसे सोलर लाइट अंधेरी रातों में राहत पहुंचाएगी और कैसे मासिक धर्म किट महिलाओं को सम्मान के साथ अपनी देखभाल करने में मदद करेगी. साधारण तिरपालों ने भी परिवारों को सुरक्षा और आश्रय का एहसास दिलाया.

अपनी भावपूर्ण आवाज़ और मंच पर प्रभावशाली उपस्थिति के लिए जानी जाने वाली, सुनंदा शर्मा लगातार यह साबित कर रही हैं कि उनका असली प्रभाव संगीत से परे है. दयालुता के इस कार्य के साथ, उन्होंने एक बार फिर दिखाया है कि करुणा और देखभाल किसी भी गीत जितना प्रभाव पैदा कर सकती है - आशा फैलाना और लोगों को याद दिलाना कि वे अकेले नहीं हैं.

विवेक रंजन अग्निहोत्री ने किया दिल्ली का दौरा

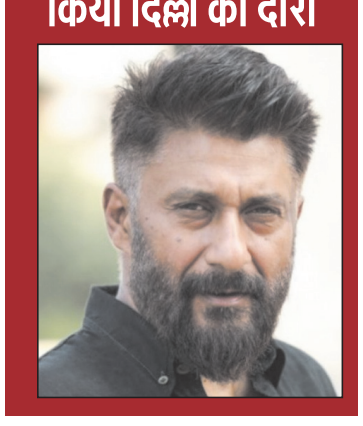

बॉलीवुड फिल्मकार विवेक रंजन अग्निहोत्री ने अपनी आने वाली फिल्म द बंगाल फ़ाइल्स की रिलीज से दिल्ली का दौरा किया है.

विवेक रंजन अग्निहोत्री इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म द बंगाल फाइल्स को लेकर चर्चा में है. विवेक हाल ही में दिल्ली पहुंचे और चित्तरंजन पार्क का दौरा किया. यह शहर की बंगाली संस्कृति का केंद्र और सबसे बड़ी बंगाली बस्ती है. उन्होंने वहां काली माता मंदिर में भी दर्शन किये और आर्शीवाद लिया.

द बंगाल फाइल्स की कहानी और निर्देशन विवेक रंजन अग्निहोत्री ने किया है, जबकि इसके निर्माता अभिषेक अग्रवाल, पल्लवी जोशी और विवेक रंजन अग्निहोत्री हैं. इसमें मिथुन चक्रवर्ती, पल्लवी जोशी, अनुपम खेर और दर्शन कुमार अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे. यह फिल्म तेज नारायण अग्रवाल और आई एम बुद्धा प्रोडक्शन्स द्वारा प्रस्तुत की गई है और विवेक की फाइल्स ट्रिलॉजी का हिस्सा है, जिसमें द कश्मीर फाइल्स और द ताशकंद फाइल्स शामिल हैं. यह फिल्म 05 सितंबर 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

कृषि जगत

बकरी पालन बन रहा है आमदनी का मजबूत जरिया

किसान पारंपरिक खेती के साथ-साथ बकरी पालन की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं. यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें कम खर्चे में अच्छी कमाई की जा सकती है. खासतौर पर कुछ चुनिंदा नस्लों की बकरियां पालन के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो रही हैं

सोनपरी बकरी- दूध और मीट दोनों में नंबर वन

सोनपरी नस्ल की बकरियां अपने दूध और मांस उत्पादन के लिए जानी जाती हैं. ये तेजी से बढ़ती हैं और इनका रखरखाव भी आसान होता है. इस नस्ल की बकरियां हर मौसम में अच्छी तरह ढल जाती हैं और एक बार में अच्छा उत्पादन देती हैं. यही कारण है कि किसान अब तेजी से सोनपरी बकरी पालन की ओर बढ़ रहे हैं.

सिरोही बकरी- मजबूत और हर मौसम में तैयार

सिरोही नस्ल की बकरियां राजस्थान की हैं, लेकिन अब ये पूरे देश में मशहूर हो चुकी हैं. यह नस्ल कठोर मौसम को भी आसानी से सहन कर लेती है. सिरोही बकरी का मांस स्वादिष्ट होता है, जिससे बाजार में इसकी हमेशा मांग बनी रहती है. इन बकरियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अच्छी होती है.

जमुनापारी बकरी-दूध की भरपूर मात्रा

जमुनापारी बकरी को भारत की सबसे ज्यादा दूध देने वाली नस्ल माना जाता है. इसका शरीर लंबा और आकर्षक होता है, जो बाजार में अच्छी कीमत दिलवाता है. इसकी एक खास बात यह है कि इसका दूध ज्यादा दिनों तक देने की क्षमता रखता है. इससे किसान दूध बेचकर नियमित आय कमा सकते हैं.

बीटल बकरी- सबसे ज्यादा पाले जाने वाली नस्ल

बीटल नस्ल की बकरियां खासतौर पर पंजाब और हरियाणा में पाई जाती हैं, लेकिन अब यह पूरे देश में लोकप्रिय हो रही हैं. इसका दूध और मांस दोनों ही उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं.

स्वास्थ्य का डबल डोज है जैविक सब्जी की खेती

आजकल लोग अपने भोजन की सुरक्षा और गुणवत्ता को लेकर ज़्यादा जागरूक हो गए हैं. इसी जागरूकता के चलते जैविक खेती एक बेहतरीन विकल्प बनकर उभरी है. यह विधि न केवल हमें पौष्टिक और रसायन-मुक्त भोजन देती है और पर्यावरण की रक्षा करती है, बल्कि यह किसानों के लिए कम लागत में अधिक मुनाफ़ा कमाने का एक शानदार ज़रिया भी है. भारत की विविध जलवायु और मिट्टी जैविक सब्ज़ी उत्पादन के लिए अधिक बेहतर है, जिससे निर्यात द्वारा भी अच्छी आय अर्जित की जा सकती है. जैविक सब्ज़ी की खेती किसानों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए फायदेमंद है, जो मुनाफ़े के साथ बेहतर स्वास्थ्य का दोहरा लाभ प्रदान करती है.

जैविक सब्जियां पोषण और सेहत का खजाना

एक शोध के अनुसार, पारंपरिक खेती की तुलना में जैविक तरीके से उगाई गई सब्ज़ियों की पौष्टिकता कहीं ज़्यादा होती है. जैविक पालक में विटामिन सी 51 फीसदी, पत्तागोभी में 41 फीसदी और मटर में 19 फीसदी तक बढ़ जाता है. वहीं, टमाटर में कैंसर-रोधी तत्व लाइकोपीन 39 फीसदी तक अधिक पाया जाता है. वही जैविक सब्जियों में कैल्शियम 63 फीसदी, आयरन 73 फीसदी और मैग्नीशियम 118 फीसदी तक ज़्यादा पाया गया है. जैविक सब्ज़ियों का रंग, चमक और स्वाद प्राकृतिक रूप से बेहतर होता है.

जैविक आलू, गाजर और पत्तागोभी जैसी सब्ज़ियों में हानिकारक नाइट्रेट की मात्रा बहुत कम होती है, जो इन्हें सेहत के लिए सुरक्षित बनाता है. जैविक खेती मिट्टी को केवल एक माध्यम नहीं, बल्कि एक जीवित इकाई मानती है. यह मिट्टी को पुनर्जीवित और उपजाऊ बनाती है, जिसके कई कारण हैं. जैविक खाद के प्रयोग से मिट्टी में जैविक कार्बन जमा होता है, जो मिट्टी की संरचना को सुधारता है और उसे पोषक तत्वों का भंडार बनाता है. कार्बन बढ़ने से मिट्टी की पानी सोखने और नमी बनाए रखने की क्षमता बढ़ जाती है, जिससे फसल को सूखे का सामना करने में

मदद मिलती है. जैविक खाद मिट्टी में मौजूद करोड़ों सूक्ष्म जीवों के लिए भोजन का काम करती है. ये जीव पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

किसानों के लिए मुनाफ़े के अवसर

जैविक खेती किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी बहुत फ़ायदेमंद है. बज़ार में जैविक सब्ज़ियों की कीमत पारंपरिक सब्ज़ियों से 10 फीसदी से 50 फीसदी तक ज़्यादा मिलती है. इसमें महंगे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं होता, जिससे खेती की लागत कम हो जाती है. खेत पर ही उपलब्ध संसाधनों जैसे गोबर, फसल अवशेष का उपयोग होता है.

केले के लिए बेहद खतरनाक है सिगाटोका रोग

केले की खेती से किसान बेहतर मुनाफा कमाते हैं, लेकिन बारिश की वजह से अगस्त-सितंबर के महीने में केले के पौधों में रोग लगने का भी खतरा बढ़ जाता है. इस महीने में केले के पौधे में सिगाटोका रोग का प्रभाव देखा जा रहा है. ये एक फफूंद जनित रोग है, जिसकी पहचान और बचाव करना किसानों के लिए बहुत जरूरी है.

पीला सिगाटोका के लक्षण- केले के पौधे में काला सिगाटोका रोग का प्रभाव देखा जा रहा है, जो एक फफूंद जनित रोग है. इस रोग के कारण केले के नए पत्ते की ऊपरी भाग पर हल्का पीला दाग या धारीदार लाइन के रूप में परिलक्षित होता है. बाद में ये धब्बे बड़े और भूरे रंग के हो जाते हैं, जिसका केंद्र हल्का कत्थई रंग का होता है. इस रोग को लगने से फलों के उत्पादन पर भारी असर पड़ता है.

बचाव के क्या हैं उपाय?- पीला सिगाटोका रोग से बचाव के लिए प्रतिरोधी किस्म के पौधे लगाना चाहिए. साथ ही खेत को खरपतवार से मुक्त रखें और रोगग्रस्त पत्तियों को हटाकर नष्ट कर दें. बारिश से अगर खेत भर गया है तो पानी की निकासी करें, खेत में पानी का ठहराव बिल्कुल न होने दें, क्योंकि यह रोग के संक्रमण को बढ़ावा देता है. इसके अलावा 1 किलो ट्राईकोडर्मा विरिडे को 25 किलो गोबर खाद के साथ प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिला दें.

काला सिगाटोका के लक्षण- केले के फसल में काला सिगाटोका रोग का प्रभाव बढ़ते जा रहा है. इस रोग के कारण केले के पत्तियों के निचले भाग पर काला धब्बा, धारीदार लाइन के रूप में होता है. ये बारिश के दिनों में अधिक तापमान होने के कारण फैलते हैं.

सितंबर में करें लहसुन की खेती

सब्जियों में लहसुन की भूमिका काफी अहम होती है. इसलिए लहसुन का इस्तेमाल हर घर में मसाले के तौर पर किया जाता है. एक्सपर्ट के अनुसार लहसुन की बुवाई का सबसे सही समय सितंबर से अक्टूबर तक माना जाता है. लागत कम और मुनाफा ज्यादा होने के कारण लहसुन को नकदी फसल भी कहा जाता है. यही वजह है कि आजकल अधिकतर किसान इसकी खेती की ओर रुख कर रहे हैं.

मिट्टी का रखें ध्यान- लहसुन के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है. मिट्टी का श्च॥ स्तर 6-7 के बीच होना चाहिए. वहीं, बुवाई से पहले खेत की 2-3 बार जुताई करें ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए.

बीज के चयन का रखें ध्यान- लहसुन की

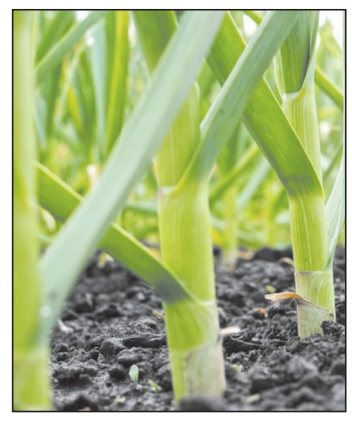

बुवाई से पहले ये ध्यान रखें कि उच्च क्वालिटी वाले बीज यानी (कली) का चयन करें. साथ ही ये ध्यान रखें कि 8-10 ग्राम वजन की कलियां बुवाई के लिए बेस्ट मानी जाती हैं.

बुवाई के समय का रखें ध्यान- जिन किसानों को लहसुन की खेती करनी है वो इसी महीने बुवाई करें. क्योंकि ये समय अधिक ठंडा या अत्यधिक गर्म नहीं है. यानी ये मौसम से बुवाई के लिए उपयुक्त है.

बीज से बीज की दूरी का ध्यान- किसानों को बुवाई करते समय ये ध्यान रखना चाहिए कि कलियों को 10-12 सेमी की दूरी पर लगाएं और पंक्तियों के बीच 15-20 सेमी की दूरी रखें.

सिंचाई का रखें ध्यान- लहसुन की फसल को पानी की जरूरत होती है. इसलिए ये समय खेती के लिए उपयुक्त है. लेकिन ये ध्यान रखें कि फसलों में जलभराव न हो. वहीं, नियमित अंतराल पर हल्की सिंचाई करें, विशेषकर बुवाई के बाद पहले 30 दिन तक सिंचाई का विशेष ध्यान रखना होता है.

उर्वरक का रखें ध्यान- लहसुन की खेती में जैविक खाद का उपयोग करें, जैसे कि खेतों में गोबर की खाद डालें. इसके साथ ही नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का संतुलित मात्रा में प्रयोग करें.

कीट और रोग नियंत्रण- लहसुन की फसल में सफेद मक्खी और फफूंद का खतरा बना रहता है. ऐसे में ध्यान रखें कि अन्य दवाइयों की जगह जैविक कीटनाशकों का उपयोग करें. साथ ही समय-समय पर फसल की जांच करते रहें.